335

Ratan Singh 35

Information Explosion and the 21st Century Youth:

Prospects and Challenges

139

Chief-Editor
Dr. Shivani Verma

Editors
Dr. Deepti Bajpai
Dr. Satyant Kumar

Scanned by CamScanner

३९

शिक्षा एवं सोशल मीडिया

रतन सिंह

सारांश

समाज मे विद्यालय एक ऐसी संस्था के रुप में विद्यमान है जो औपचारिक शिक्षा का आवश्यक एवं शशक्त अंग है। परन्तु देश की एक बड़ी जनसंख्या जो शिक्षा प्राप्त करना चाहती है अपने भरण पोषण हेतू काम काज में व्यस्त रहने के कारण किसी भी औपचारिक संस्था में शिक्षा प्राप्त करने के लिये नामांकन नहीं करा पाते हैं उनके लिए सोशल मीडिया एक वरदान की तरह साबित हुआ है। ऑनलाइन पाठ्यक्रमों के समाज के निम्न तबके से लेकर उच्च तबके तक सबको शिक्षा के अवसर प्राप्त हो रहे हैं। सोशल मीडिया फेसबुक, वाट्स ऐप, ट्विटर, जैसे सोशल नेटवर्क के उपयोगकर्ताओं की संख्या अरबों में है। 20 वर्ष से भी कम समय मे फेसबुक, वाट्स ऐप, ट्विटर आदि सोशल नेटवर्क को उपयोग करने वाले व्यक्तियों की संख्या ढाई अरब से ज्यादा है। फेसबुक की आधिकारिक रिपोर्ट के अनुसार 14 जुलाई 2018 तक अकेले भारत मे फेसबुक के एक्टिव सदस्य 241 मिलियन पहुँच गयी है।

सोशल मीडिया की हानियों की अपेक्षा लाभ अत्याधिक होने के कारण उसे शिक्षा के साधनों मे सम्मिलित करने की आवश्यकता आन पड़ती है।

सदियों से विद्यालय समाज में एक महत्त्वपूर्ण संस्था के रुप में विद्यमान है। समाज के विकास मे विद्यालयों की भुमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। शैक्षिक विचारकों मनोवैज्ञानिक विद्वानों एवं दार्शनिकों ने शिक्षा को तीन भागों में विभाजित किया है- औपचारिक शिक्षा, गैर-औपचारिक शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा जहाँ औपचारीक शिक्षा का सशक्त माध्यम स्कूली शिक्षा है वहीं वर्तमान समय में गैर-औपचरिक शिक्षा का सशक्त माध्यम इंटरनेट व सोशल मीडिया बनता जा रहा है। इसकी बानगी इसी बात से देखी जा सकती है कि यदि वर्तमान समय मे एकलव्य की कल्पना की जाए तो एकलव्य जैसा दृढ संकल्पित और एकाग्र छात्र बड़ी सरलता इंटरनेट या व्यापक रूप ऑनलाइन पाठ्यक्रम के द्वारा अपना शिक्षक पा सकता है तथा अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो सकता है। यदि दृढ़ संकल्प हो और लगन से कार्य किया जाए तो एक निःशुल्क ऑनलाइन पाठ्यक्रम से भी सफलता के द्वार खोले जा सकते हैं। जबलपुर के सत्रह वर्षीय अमोल भावे ने ऐसा कर दिखाया। 14 मार्च 2013 को उसे सुचना मिली कि एम.आई.टी. (मेसचयूसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी) के मुक (WWW-EKD-[illegible]) के परिपथ और Electronics की पाठ्यक्रम मे 97: अंक प्राप्त करने के पश्चात् उसे एम.आई.टी. में [illegible] गया है।

[illegible] प्रोफेसर, कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर गौतमबुद्ध नगर

Scanned by CamScanner

अभी हाल ही में एनार्कुलम स्टेशन पर कूली का काम करने वाले श्रीनाथ, रेल्वे स्टेशन पर उपलब्ध मुफ्त वाई फाई सुविधा का लाभ उठाते हुये इंटरनेट के जरिये पढ़ाई करके केरल पब्लिक सर्विस कमीशन (के.पी.एस.सी.) की लिखित परीक्षा पास कर ली है। इसके लिये वह किताबों के ढेर मे नहीं खोये बल्कि अपने ख्वाब को पूरा करने के लिये उन्होंने स्मार्ट फोन और इयरफोन को अपना हथियार बनाया।

ज्ञान की प्राप्ति और किसी विषय मे गहराई से अध्ययन के लिये अब यह आवश्यक नहीं रहा है कि शिक्षा के पारंपरिक और औपचारिक संस्थानों की ही शरण ली जाए आज सभी विषयों पर ऑनलाइन सामग्री बहुतायत मे उपलब्ध है कोई भी छात्र किसी भी विषय मे महारत हासिल कर ऐसी प्रसिद्धि पा सकता है जिसकी सामान्य रूप मे कोई व्यक्ति कल्पना भी नहीं कर सकता। आई.सी.टी (सूचना संचार प्रोद्यौगिकी) आधारित सोशल मीडिया के आ जाने से शिक्षा में नवाचार की गति मे तेजी आयी है। पिछले लगभग सौ वर्षों में औपचारिक शिक्षा के संदर्भ मे कोई बड़ा बदलाव नहीं आया है शिक्षक, छात्र, कक्षा, पाठ्यक्रम, परीक्षा और प्रमाण-पत्र लगभग वैसे के वैसे ही है बल्कि शिक्षण विधियाँ तौर तरीके आदि भी जस के तस बने हैं। बीसवीं सदी के अन्त में जब से इंटरनेट सेवा कम खर्चीली मोबाइल टेलीफोन सेवा के कारण सर्वत्र एवं सर्वव्यापी हुई है शिक्षा मे नया मोड़ आया है। सोशल मीडिया जो उच्च बैंडविड्थ इंटरनेट से कनेक्ट कर सामग्री को विविध रुपों में प्रदर्शित करता है को व्यापक विस्तार मिला है।

मैं जब सोशल मीडिया शब्द का उल्लेख करता हूँ तो मेरा तात्पर्य केवल फेसबुक, वाट्स ऐप, ट्विटर तथा यु-ट्युब से ही नहीं है बल्कि मेरा तात्पर्य एक ऐसी आई.सी.टी. आधारित कम्यूनिटी से है जहाँ उपयोगकर्ता द्वारा सामग्री को साथ साथ तैयार किया जा सकता है, साझा किया जा सकता है और उसे एक नया लक्ष्य दिया जा सकता है।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न है कि क्या आई.सी.टी. आधारित सोशल मीडिया शिक्षा के लिये अच्छा है? अमेरिकी लेखक निकोल्स कार अपनी पुस्तक "दि शैलोज: व्हाट द इंटरनेट इज डुइंग आवर ब्रैंस" में इंटरनेट के विरोध में कहते हैं कि इंटरनेट हमारे मौलिक रुप से ध्यान केंद्रित करने और सोचने की क्षमता को कमजोर बना देता है इंटरनेट धीरे-धीरे हमें लम्बे समय तक पढ़ने तथा ध्यान केंद्रित करने के अयोग्य बना देता है।

जो लोग इन तर्कों से असहमत है उनका कहना है कि तथ्यों कि गुणवत्ता की पहचान और छानने महत्त्वपूर्ण जन्मजात रणनीतियां हैं जो आज के सुचना बाहुल्य समय मे अनिवार्य है। इससे बहुत सारी सूचनाओं मे से काम की बात छाँटने मे आसानी होती है। शिक्षा का उद्देश्य किसी एक विशेष क्षेत्र या विषय मे ज्ञान अर्जन करना होता है ताकि उस विषय को ठीक से समझा जा सके तथा उसमें निपुणता प्राप्त की जा सके शिक्षा के उद्देश्य-ज्ञान अर्जन, ज्ञान के क्षेत्रों मे गहरी समझ, निपुणता जिससे सृजनात्मकता, नवाचार और मुल्य सृजन होता हो, तो निश्चित रुप से सोशल मीडिया से लाभ होता है।

सेठ गौड़वीन ने अपनी पुस्तक "स्टॉप स्टीलिंग ड्रीम्स-व्हाट इज स्कूल फार" में कहा है कि शिक्षा बिंदुओं को एकत्र करने के लिये नहीं बल्कि जोड़ने के लिये होते है। सोशल मीडिया उपयोगकर्ता के बिंदुओं को जोड़ने मे मदद करता है।

सोशल मीडिया विवेचना ओर अभिव्यक्ति की शक्ति के विकास का भी एक प्रभावशाली मंच है। इन मंचों पर बहस, चर्चाऐं अथवा किसी सामग्री पर अपनी टिप्पणी अंकित करने से अनेक विषय अच्छी तरह में आते हैं सोशल मीडिया की मल्टीमीडिया प्रकृति हमें विभिन्न प्रकार से अभिव्यक्ति करने का अवसर प्रदान

Scanned by CamScanner

है उपयोगकर्ता अपने विषय की समस्या के विषय में अपने विचार, वीडियो, कहानी अथवा टिप्पणी किसी भी रुप मे व्यक्त कर सकते है।

साथ मिलकर अध्ययन की गतिविधियों को सोशल मीडिया के माध्यम से एक अलग ऊंचाई प्रदान की जा सकती है। सोशल मीडिया नवीन संदर्भों में ज्ञान का प्रयोग एवं नवीन समाधानों की खोज तथा योग्यता को परखने की बेहतर पद्धति है। छात्रों को अपने ज्ञान को प्रदर्शित करने का अवसर दिया जाना चाहिए। सोशल मीडिया इसकी अनुमति प्रदान करता है। सोशल मीडिया की प्रकृति मल्टीमीडिया होने के कारण यह ज्ञान को अभिव्यक्त करने के लिये लिखित सामग्री ब्लॉग, प्रस्तुतिकरण, कहानियाँ तथा वीडियो जैसे अनेक माध्यम उपलब्ध कराता है।

शिक्षा में सोशल मीडिया सम्मिलित करने से छात्र को बाह्य रूप से प्रेरित होकर आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है सोशल मीडिया आधारित गेम्स भी सकारात्मक प्रभाव डालते है बशर्ते वह एक व्यसन न बन जाए दुर दराज के शिक्षकों को सोशल मीडिया के माध्यम से जोड़ना अत्याधिक लाभदायक हो सकता है। इससे अध्यापकों को अपने विचारों और अनुभवों के आदन प्रदान का सुअवसर प्राप्त होगा।

निष्कर्ष – सोशल मीडिया मे लगनशील व अपने विषय पर प्रभाव रखने वाले शिक्षकों को लोकप्रिय शिक्षक मे बदलने की भी क्षमता है, जो लाखों लोगों को शिक्षित कर सकते हैं। सोशल मीडिया आधारित शिक्षा में अपेक्षित परिणाम प्रदान करने की उच्च क्षमता है और भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश मे सभी के लिये शिक्षा जैसी चुनौती से अपनी कम खर्चीली संरचना के कारण निपट सकती है।

शिक्षक- प्रशिक्षण में भी सोशल मीडिया के मल्टीमीडिया स्वरूप के कारण छात्र–अध्यापकों को सूक्ष्म शिक्षण आदि से सम्बन्धित विडियो, लेख इत्यादि आसानी से प्राप्त हो जाते हैं जो छात्र अध्यापकों हेतू लाभकारी एवं हितकारी होते हैं।

शिक्षा मे सोशल मीडिया के लाभ, उसकी हानियों से अधिक है इसलिये सोशल मीडिया को शिक्षा के साधनों मे शामिल किया जा सकता है जो वर्तमान समय मे आवश्यक प्रतीत होता है साथ ही शिक्षा मे सोशल मीडिया के प्रयोग के हानिकारक पहलूओं के प्रति सचेत रहना भी अति आवश्यक है। सोशल मीडिया में कम खर्चीली, सार्वभौम प्रकृति, वार्तालाप, सामञ्जस्य, अपेक्षा पर खरा उतरने की शिक्षा की जो सम्भावनाऐं निहित हैं। वे भारत में शिक्षा को नये आयाम प्रदान करने मे सफल हो सकती हैं।

संदर्भ

डॉ. शर्मा.आर.ए. (2012)– "शिक्षण तकनीकी"– आर.लाल. प्रकाशन मेरठ

यादव सतीश कुमार (2009)– "अध्यापक शिक्षा: समस्या व चुनौतियां"–भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन. सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली

पंत अतुल (2013)– "शिक्षा में सोशल मीडिया: मदद अथवा बाधा", योजना नई दिल्ली

https/hindi-yourstory-com

Scanned by CamScanner